RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
अक्टूबर
03
2024

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors
13. Index

By Ankit Avasthi Sir

सशस्त्र बलों द्वारा औपनिवेशिक प्रथाओं को त्यागने का प्रस्ताव
Proposal for the armed forces to abandon colonial practices

हाल ही में **रक्षा मंत्री** द्वारा जारी प्रकाशन में **औपनिवेशिक प्रथाओं को त्यागने** और सशस्त्र बलों में **स्वदेशीकरण** को बढ़ावा देने का प्रस्ताव रखा गया है। इसमें समकालीन सैन्य प्रथाओं के साथ प्राचीन भारतीय ज्ञान के संश्लेषण के लिए प्रोजेक्ट उद्भव की शुरुआत की गई है।

प्रमुख संशोधन और प्रस्ताव:

स्वदेशी रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करना:

- ✓ प्राचीन भारतीय **रणनीतिकारों के कार्यों को सैन्य नेतृत्व पाठ्यक्रमों** में शामिल किया जाएगा।
- ✓ यह प्रयास युवा सैन्य अधिकारियों को भारत **केंद्रित रणनीतिक सोच** को अपनाने के लिए प्रेरित करेगा।
- ✓ उदाहरण के लिए, **मराठों, सिखों और चंद्रगुप्त मौर्य** के प्रशासनिक मॉडल का अध्ययन किया जाएगा।

स्वदेशी ग्रंथों को शामिल करना:

- ✓ सेना प्रशिक्षण कमान ने सैन्य कर्मियों के लिए प्राचीन भारतीय अवधारणाओं पर आधारित पठन सामग्री तैयार की है।
- ✓ इसमें **गीता, पंचतंत्र, अर्थशास्त्र, चाणक्य नीति** और **तिरुक्कुरल** जैसे ग्रंथों से उद्धरण शामिल हैं, जिन्हें 'प्राचीन भारतीय ज्ञान के मोती' कहा गया है।

इन्फेंट्री रेजीमेंटों का अखिल भारतीय चरित्र:

- ✓ सेना अपने **इन्फेंट्री रेजीमेंटों** को अखिल भारतीय स्वरूप देने पर विचार कर रही है।
- ✓ इससे विभिन्न इकाइयों में **विविधता और प्रतिनिधित्व** को बढ़ावा मिलेगा।

भारतीय सांस्कृतिक तत्त्वों का उन्नत उपयोग:

- ✓ सैन्य प्रशिक्षण सुविधाओं में औपनिवेशिक युग की साहित्यिक कृतियों, जैसे **रुडयार्ड किपलिंग की "IF"** और **NDA** में मौजूदा **अंग्रेजी प्रार्थना** को **भारतीय कविताओं, प्रार्थनाओं और धुनों** से प्रतिस्थापित किया जाएगा।
- ✓ यह **भारतीय संस्कृति** को बढ़ावा देने का एक प्रयास है।

त्रि-सेवा अधिनियम का प्रारूप तैयार करना:

- ✓ सेना, नौसेना और वायु सेना में प्रशासन को सरल बनाने के लिए **एकीकृत त्रि-सेवा अधिनियम** पर विचार किया जा रहा है।
- ✓ यह तीन अलग-अलग सेवा अधिनियमों के लिए एक महत्वपूर्ण **संरचनात्मक प्रतिस्थापन** के रूप में कार्य करेगा।

प्रोजेक्ट उद्भव के बारे में :

प्रोजेक्ट उद्भव भारतीय सेना और यूनाइटेड सर्विसेज इंस्टीट्यूशन ऑफ इंडिया (USI) के बीच एक संयुक्त पहल है। इसका मुख्य उद्देश्य भारत के **समृद्ध ऐतिहासिक सैन्य ज्ञान** को आधुनिक सैन्य प्रथाओं के साथ एकीकृत करना है। यह प्रोजेक्ट भारतीय सैन्य रणनीति में प्राचीन भारतीय ग्रंथों और विचारधाराओं को शामिल करके रणनीतिक सोच को **पुनः संजीवनी** प्रदान करना चाहता है।

प्राचीन ग्रंथों एवं दर्शनशास्त्र को शामिल करना:

- **चाणक्य का अर्थशास्त्र:** यह ग्रंथ **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, सॉफ्ट पावर और कूटनीति** के महत्व पर जोर देता है। इसे आधुनिक सैन्य प्रथाओं के साथ जोड़ा गया है, जिसमें रणनीतिक साझेदारी और गठबंधन शामिल हैं।
- **तिरुवल्लुवर द्वारा तिरुक्कुरल:** यह ग्रंथ **न्यायपूर्ण युद्ध सिद्धांतों और आधुनिक** सैन्य नैतिकता जैसे जिनेवा कन्वेंशन के साथ संरेखित होता है। यह युद्ध **सहित सभी स्थितियों में नैतिक** आचरण को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।
- **पूर्व नेतृत्वकर्त्ताओं के सैन्य अभियान: चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक, और चोल** जैसे भारतीय नेतृत्वकर्त्ताओं के शासन और उनकी सैन्य सफलताएँ **महत्वपूर्ण जानकारी** प्रदान करती हैं।

प्रमुख सैन्य अभियान:

- ☑ **सरायघाट का नौसैनिक युद्ध (1671): लचित बोड़फुकन** की अगुवाई में हुई इस लड़ाई में **कूटनीति, मनोवैज्ञानिक युद्ध, और सैन्य खुफिया** जानकारी का उपयोग करते हुए मुगलों की कमजोरियों का लाभ उठाया गया।
- ☑ **छत्रपति शिवाजी एवं महाराजा रणजीत सिंह:** इन दोनों महान नेताओं ने असममित **युद्ध और नौसैनिक रक्षा** के सबक सीखे और अपने समय में संख्या में **श्रेष्ठ मुगल और अफगान सेनाओं पर विजय** प्राप्त की।

रक्षा संस्थानों में इंडिक अध्ययन:

- ☑ भारतीय संस्कृति और रणनीतिक सोच को जोड़ने वाला अनुसंधान, जैसे कि **रक्षा प्रबंधन महाविद्यालय (CDM)** द्वारा किया गया है, जिसने प्रोजेक्ट उद्भव को महत्वपूर्ण सामग्री प्रदान की है।

स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता (4S) अभियान / Swabhav Swachhata Sanskaar Swachhata (4S)

स्वच्छ भारत मिशन (SBM) ने भारत में स्वच्छता के परिदृश्य को सफलतापूर्वक बदल दिया है और इसे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा **2 अक्टूबर 2014** को लॉन्च किया गया था। इसका उद्देश्य देश में **स्वच्छता कवरेज** को बढ़ावा देना और **खुले में शौच मुक्त (ODF)** भारत बनाने का था। यह **मिशन 2019** तक **महात्मा गांधी** की 150वीं जयंती तक ODF भारत बनाने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को हासिल करने में सफल रहा।

4S अभियान: स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता

4S अभियान (स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता) स्वच्छ भारत मिशन की 10वीं वर्षगांठ पर 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2024 तक चलाया गया। यह अभियान तीन प्रमुख स्तंभों पर आधारित है:

1. **स्वच्छता की भागीदारी – जनभागीदारी, जागरूकता और स्वच्छता गतिविधियाँ।**
2. **संपूर्ण स्वच्छता – गंदे स्थानों का समयबद्ध रूपांतरण।**
3. **सफाई मित्र सुरक्षा शिविर – स्वच्छता कार्यकर्ताओं की सुरक्षा, स्वास्थ्य जांच, और सम्मान सुनिश्चित करना।**

स्वच्छ भारत मिशन (SBM): स्वच्छ भारत मिशन का आरंभ 2 अक्टूबर 2014 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया, जिसका उद्देश्य भारत में **सार्वभौमिक स्वच्छता कवरेज** प्राप्त करना है। इस मिशन के तहत, भारत को 2019 में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती तक **"खुले में शौच मुक्त" (ओडीएफ)** बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था।

स्वच्छ भारत मिशन (SBM) के चरण:

- ✓ **स्वच्छ भारत मिशन - ग्रामीण**
- ✓ **चरण I (2014-2019): स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण (एसबीएम-जी)** का पहला चरण एक अभूतपूर्व पहल थी, जिसने स्वच्छता प्रयासों में राष्ट्रव्यापी भागीदारी को प्रोत्साहित किया।
  - **लक्ष्य: खुले में शौच को समाप्त करना, जागरूकता अभियान, शिक्षा, और बुनियादी ढांचे** के विकास के माध्यम से।
  - **प्रभाव:** शौचालयों और स्वच्छता संबंधी बुनियादी ढांचे के निर्माण से स्वच्छता में सुधार हुआ और स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा, विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में।
- ✓ **चरण II (2019-2025):** चरण-I की सफलता को देखते हुए, एसबीएम-जी चरण II का शुभारंभ 2025 तक ओडीएफ स्थिति को बनाए रखने और ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन के लिए किया गया।
  - **लक्ष्य: ओडीएफ प्लस गांव बनाना और स्वच्छता मानकों में सुधार करना।**
  - **निवेश:** इस चरण के लिए **1.40 लाख करोड़ रुपये** का निवेश किया गया।
  - **उपलब्धियां:** सितंबर 2024 तक, **5.87 लाख** से अधिक गांवों ने **ओडीएफ** प्लस का दर्जा हासिल किया। **3.92 लाख गांव ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली** और **4.95 लाख गांव तरल अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली** लागू कर चुके हैं।
- ✓ **स्वच्छ भारत मिशन – शहरी: स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) (एसबीएम-यू)** का शुभारंभ 2 अक्टूबर 2014 को हुआ।
  - **लक्ष्य: 100 प्रतिशत खुले में शौच मुक्त स्थिति** प्राप्त करना और वैज्ञानिक ठोस अपशिष्ट प्रबंधन सुनिश्चित करना।
  - **प्रभाव:** सितंबर 2024 तक, इस मिशन के तहत **63 लाख से अधिक घरेलू शौचालयों** और **6.3 लाख से अधिक सार्वजनिक शौचालयों** का निर्माण हुआ है।

स्वच्छ भारत मिशन के प्रभाव:

- ✓ **स्वास्थ्य में सुधार:** ग्रामीण भारत में **स्वच्छता सुविधाओं** की कमी से प्रभावित लोगों के स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार हुआ।
- ✓ **सार्वजनिक स्थलों की सफाई: 7,611 समुद्र** तटों, **6,371 नदी तटों, और 1,23,840** से अधिक सार्वजनिक स्थलों की सफाई की गई।
- ✓ **कचरा प्रबंधन:** 16,000 से अधिक जल निकाय और 66,779 कचरा-संवेदनशील स्थानों की सफाई की गई।

ODF प्लस लक्ष्य:

सितंबर 2024 तक, **5.87 लाख** से अधिक गांव ODF प्लस बन चुके हैं, जिनमें से **3.92 लाख गांव ठोस अपशिष्ट प्रबंधन** और **4.95 लाख गांव तरल अपशिष्ट प्रबंधन** प्रणाली लागू कर चुके हैं।

स्वच्छ भारत मिशन के प्रमुख लाभ:

स्वच्छ भारत मिशन (SBM) भारत में स्वच्छता को बढ़ावा देने वाला एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है, जिसने **शिशु मृत्यु दर** को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एक हालिया अध्ययन के अनुसार, इस मिशन के तहत शौचालयों की उपलब्धता ने **प्रतिवर्ष 60,000 से 70,000 शिशुओं** की जान बचाने में मदद की है।

अध्ययन का अवलोकन और निष्कर्ष:

- ☑ **डेटा विश्लेषण:** अध्ययन में **2011-2020** के बीच **35 भारतीय राज्यों और 640 जिलों** के डेटा का उपयोग किया गया। इसमें **शिशु मृत्यु दर (IMR)** और **पांच साल से कम उम्र** के बच्चों की **मृत्यु दर (U5MR)** पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- ☑ **संबंध:** शौचालयों की उपलब्धता और बाल **मृत्यु दर** के बीच एक मजबूत विपरीत संबंध पाया गया। 2014 के बाद से, शौचालयों का निर्माण तेज गति से हुआ, जिसमें **1.4 लाख करोड़ रुपये** का सार्वजनिक निवेश किया गया।

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) की 57वीं कार्यकारी समिति बैठक
57th Executive Committee Meeting of National Mission for Clean Ganga (NMCG)

हाल ही में राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG) की कार्यकारी समिति (EC) की 57वीं बैठक में विभिन्न राज्यों में प्रमुख परियोजनाओं को मंजूरी दी गई।

प्रमुख परियोजनाएं:

- ✓ **बिहार के कटिहार:**
  - **परियोजना लागत:** 350 करोड़ रुपये
  - **उद्देश्य:** जल निकासी और सीवेज प्रबंधन में सुधार।
  - **मुख्य सुविधाएं:** रोजितपुर में **35 एमएलडी का एसटीपी** और **शरीफगंज में 20.5 एमएलडी** का एसटीपी का निर्माण।
  - **मॉडल:** डीबीओटी (डिजाइन, बिल्ड, ऑपरेट और ट्रांसफर)।
- ✓ **उत्तर प्रदेश के अलीगढ़:**
  - **परियोजना लागत:** 488 करोड़ रुपये
  - **उद्देश्य:** इंटरसेप्शन, डायवर्जन और एसटीपी परियोजना।
  - **मुख्य सुविधाएं:** 65 एमएलडी और 48 एमएलडी के दो एसटीपी।
  - **समय सीमा:** 24 महीने के भीतर पूरा किया जाना है।
- ✓ **बिहार के सुपौल:**
  - **परियोजना लागत:** 76.69 करोड़ रुपये
  - **उद्देश्य:** **तीन एसटीपी और छह इंटरसेप्शन** एवं डायवर्जन संरचनाओं का निर्माण।
- ✓ **उत्तराखंड:**
  - **परियोजना लागत:** 2.5 करोड़ रुपये
  - **उद्देश्य:** मौजूदा एसटीपी पर **को-ट्रीटमेंट सेऐज** का प्रबंधन।
- ✓ **महाकुंभ 2025:**
  - **आईईसी गतिविधियों के लिए:** **30 करोड़ रुपये** की परियोजना को मंजूरी दी गई है, जिसमें 'पेंट माई सिटी' और गंगा से संबंधित विषयों पर दीवार पेंटिंग शामिल है।

अन्य महत्वपूर्ण निर्णय:

- ☑ **पीआईएएस परियोजना:** **प्रदूषण संबंधी सूची, मूल्यांकन और निगरानी** के लिए जनशक्ति का पुनर्गठन।
- ☑ **ऑनलाइन सतत प्रवाह निगरानी प्रणाली:** गंगा नदी बेसिन में मौजूदा एसटीपी की निगरानी को मजबूत करने के लिए **33 करोड़ रुपये** की परियोजना।
- ☑ **छोटी नदियों के संरक्षण के लिए प्रयोगशाला परियोजना:** **13 करोड़ रुपये** के निवेश के साथ।
- ☑ **कुकरैल घड़ियाल पुनर्वास केन्द्र में संरक्षण प्रजनन कार्यक्रम:** **2 करोड़ रुपये** की लागत से।

निष्कर्ष: इन परियोजनाओं का उद्देश्य गंगा नदी के संरक्षण और स्वच्छता में सुधार लाना है, साथ ही **2025 में महाकुंभ** के दौरान **स्वच्छता और जागरूकता** बढ़ाना है।

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG):

- ✓ **राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG)** की स्थापना **12 अगस्त 2011** को **सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम, 1860** के तहत एक सोसाइटी के रूप में की गई थी।
- ✓ यह **राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन प्राधिकरण (NGRBA)** की कार्यान्वयन शाखा के रूप में कार्य करता था, जिसे **पर्यावरण संरक्षण अधिनियम (EPA), 1986** के प्रावधानों के तहत गठित किया गया था।
- ✓ वर्ष **2016** में NGRBA का विघटन कर दिया गया और इसकी जगह **राष्ट्रीय गंगा नदी कायाकल्प, संरक्षण एवं प्रबंधन परिषद** ने ले ली।

उद्देश्य:

- ☑ NMCG का मुख्य उद्देश्य गंगा नदी के प्रदूषण को कम करना और उसके कायाकल्प को सुनिश्चित करना है। इसके अंतर्गत **"नमामि गंगे"** कार्यक्रम शामिल है, जो गंगा को साफ करने के लिए NMCG के प्रमुख कार्यक्रमों में से एक है।
- ☑ यह जल की गुणवत्ता को सुधारने और पर्यावरणीय रूप से सतत विकास को सुनिश्चित करने के लिए एक **व्यापक योजना और प्रबंधन को बढ़ावा देने** का लक्ष्य रखता है।
- ☑ इसके लिए, नदी में न्यूनतम पारिस्थितिक प्रवाह को बनाए रखने हेतु **अंतरक्षेत्रीय समन्वय** को बढ़ावा दिया जाता है।

संगठनात्मक संरचना: NMCG की संरचना में भारत के गंगा नदी के **पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम, नियंत्रण और कमी** के उपायों के लिए पांच स्तरीय संरचना का प्रावधान किया गया है:

- राष्ट्रीय गंगा परिषद
- गंगा नदी पर सशक्त कार्य बल (ETF)
- राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG)
- राज्य गंगा समितियाँ
- जिला गंगा समितियाँ

बिहार में बाढ़ की समस्या / flood problem in bihar

हाल ही में **बिहार में बाढ़ ने 11.84 लाख** लोगों को प्रभावित किया है, जिससे कई लोग अपने घरों से बेघर हो गए हैं। प्रभावितों को हवाई मार्ग से भोजन के पैकेट गिराए जा रहे हैं और वे आश्रय स्थलों में रह रहे हैं। इस **संकट के दौरान, जल जनित बीमारियों** के प्रति उनकी संवेदनशीलता बढ़ गई है।

- ✓ **उत्तर बिहार में बाढ़ का खतरा:** हर साल उत्तर बिहार में बाढ़ आती है, जिससे **लाखों लोग अपनी फसलें और पशुधन खो** देते हैं। यह चक्र तब तक जारी रहता है जब तक कि कोई स्थायी समाधान नहीं निकलता। बिहार की **भौगोलिक स्थिति और दशकों** से चल रही अदूरदर्शी योजनाएं इस समस्या के मुख्य कारण हैं।
- ✓ **बिहार का भूगोल और बाढ़:** बिहार भारत का सबसे अधिक **बाढ़-प्रवण राज्य** है, जहां उत्तर **बिहार की 76 प्रतिशत जनसंख्या बाढ़** के खतरे में रहती है। यहाँ की **नदियाँ**, जो हिमालय से निकलती हैं, बारिश के दौरान पानी का बहाव बहुत ज्यादा होता हैं।
- ✓ बिहार के आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने बाढ़ को चार श्रेणियों में विभाजित किया है:
  1. **अचानक आने वाली बाढ़ -** जो **नेपाल** में बारिश के कारण होती है।
  2. **नदी की बाढ़ -** जिसमें बाढ़ का समय **24 घंटे** होता है।
  3. **जल निकासी की भीड़ -** जिसमें बाढ़ पूरे **मानसून मौसम** तक बनी रहती है।
  4. **स्थायी जल भराव -** जो कई कारणों से होती है, जैसे गाद से **भरी नदियाँ और जल निकासी चैनलों** का अतिक्रमण।

तटबंध और कोसी नदी:

- कोसी नदी, जिसे **'बिहार का शोक'** कहा जाता है, ने इस समस्या को और बढ़ा दिया है।
- स्वतंत्रता के बाद, **1950 के दशक** में कोसी के बहाव को रोकने के लिए तटबंध बनाए गए थे, लेकिन ये स्थायी समाधान नहीं साबित हुए हैं।
- तटबंधों ने नदी के **मार्ग को संकीर्ण** कर दिया है, जिससे **तलछट का स्तर** बढ़ रहा है और बाढ़ की संभावना बढ़ गई है।
- इस बार बाढ़ की स्थिति और भी गंभीर है क्योंकि **नेपाल** में कोसी पर बने **बीरपुर बैराज से 6.6 लाख क्यूसेक** पानी छोड़ा गया है, जो पिछले छह दशकों में सबसे अधिक है।

बिहार में बाढ़ का प्रभाव:

- बिहार में बाढ़ का असर केवल जान-माल के नुकसान तक सीमित नहीं है। इसमें फसलों, बुनियादी ढांचे, पशुधन की हानि और राज्य से बाहर पलायन की आर्थिक लागत भी शामिल है।
- राज्य सरकार हर साल बाढ़ प्रबंधन और राहत के लिए **लगभग 1,000 करोड़ रुपये खर्च** करती है।

संभावित समाधान:

- ☑ कोसी पर बांध बनाने का प्रस्ताव लंबे समय से किया जा रहा है, लेकिन इसके लिए नेपाल की भागीदारी भी आवश्यक है।
- ☑ हाल ही में, बिहार के उपमुख्यमंत्री ने केंद्रीय जलशक्ति मंत्री से कोसी पर **"एक अतिरिक्त बैराज"** बनाने का अनुरोध किया है। हालांकि, तटबंधों के अनुभव से यह स्पष्ट है कि कोसी समस्या का स्थायी समाधान इंजीनियरिंग उपायों से नहीं निकल सकता।

कोसी नदी के बारे में:

कोसी नदी एक महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय नदी है, जो **चीन, नेपाल, और भारत** से होकर बहती है। यह गंगा नदी की एक प्रमुख सहायक नदी मानी जाती है।

उद्गम:

- ☑ कोसी नदी का उद्गम **नेपाल और तिब्बत** के हिमालयी क्षेत्र में होता है, जहाँ यह तीन धाराओं - **सुन कोसी, अरुण कोसी,** और **तमुर कोसी** - के संगम से बनती है।
- ☑ भारतीय-नेपाली सीमा से लगभग **30 मील (48 किमी) उत्तर** में, कोसी कई प्रमुख सहायक नदियों से मिलती है और शिवालिक पहाड़ियों के माध्यम से दक्षिण की ओर बहती है।

मार्ग:

- ☑ कोसी नदी लगभग **450 मील (724 किमी)** की यात्रा करने के बाद बिहार राज्य में गंगा नदी में मिल जाती है।
- ☑ यह नदी **74,500 वर्ग किलोमीटर** क्षेत्र को जल से भरती है, जिसमें से केवल **11,070 वर्ग किलोमीटर** क्षेत्र ही भारतीय क्षेत्र में आता है।
- ☑ कोसी नदी घाटी खड़ी चट्टानों से घिरी हुई है, जो इसे उत्तर में **यारलुंग जांग्बो नदी,** पूर्व में **महानंदा नदी**, पश्चिम में **गंडकी**, और दक्षिण में **गंगा** से अलग करती है।

विशेषताएँ:

- ☑ कोसी नदी में **मलबे का अत्यधिक बहाव** होता है, जिसके कारण उत्तर भारत के विशाल मैदान में कोई स्थायी मार्ग नहीं है।
- ☑ यह नदी आमतौर पर पश्चिम दिशा में अपना मार्ग बदलने के लिए जानी जाती है। पिछले **200** वर्षों में, नदी लगभग **112 किलोमीटर** की दूरी तक पश्चिम की ओर स्थानांतरित हो चुकी है, जिससे कृषि भूमि के बड़े हिस्से को नुकसान हुआ है।

सहायक नदियाँ:

कोसी नदी की **सात प्रमुख सहायक नदियाँ** हैं: **सुन कोशी, तमा कोशी या तांबा कोशी, दूध कोशी, इंद्रावती, लिखु, अरुण, तमोर या तमार**

ग्रीनहशिंग: यह क्या है और कंपनियां ऐसा क्यों करती हैं?
Greenhushing: What is it and why do companies do it?

हाल ही में, दुनिया भर में **कार्बन-न्यूट्रल प्रमाणित फर्मों** की संख्या में वृद्धि हुई है, लेकिन उनमें से कई अपनी पर्यावरणीय उपलब्धियों को बढ़ावा नहीं देना चाहते हैं। इससे **"ग्रीनहशिंग"** के रूप में जाना जाने वाला वैश्विक रुझान उभर रहा है।

ग्रीनहशिंग क्या है?

ग्रीनहशिंग (Greenhushing) एक मार्केटिंग रणनीति है जिसमें कंपनियाँ या संगठन अपने **उत्पादों या सेवाओं** को **अधिक पर्यावरण के अनुकूल या टिकाऊ** के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जबकि वास्तव में उनके प्रथाएँ या उत्पाद इस **दावे के विपरीत** होते हैं। यह उपभोक्ताओं को यह विश्वास दिलाने के लिए किया जाता है कि वे पर्यावरण के लिए जिम्मेदार हैं, जबकि वास्तव में उनके कार्य या उत्पादों का पर्यावरण पर **नकारात्मक प्रभाव** होता है।

कंपनियाँ ग्रीनहशिंग क्यों करती हैं?

- ☑ **संयुक्त राज्य अमेरिका में मुकदमेबाजी संबंधी चिंताएँ:** अमेरिका में सार्वजनिक कंपनियों को मुकदमों का सामना करना पड़ सकता है यदि उन्हें **शेयरधारक मुनाफे** की तुलना में स्थिरता को प्राथमिकता देते हुए देखा जाता है। यह कानूनी जोखिम कंपनियों को अपने **पर्यावरणीय पहलों** पर खुलकर चर्चा करने से हतोत्साहित करता है।
- ☑ **ईएसजी के विरुद्ध प्रतिक्रिया:** अमेरिका के **रूढ़िवादी राज्यों में ईएसजी (पर्यावरण, सामाजिक और शासन) प्रयासों** के खिलाफ प्रतिक्रिया हुई है। इसने कुछ कंपनियों को राजनीतिक और नियामक जांच से बचने के लिए अपने पर्यावरणीय लक्ष्यों पर चर्चा करना बंद करने के लिए प्रेरित किया है।
- ☑ **हरित उत्पादों की निम्न गुणवत्ता:** कई उपभोक्ता हरित उत्पादों को निम्न **गुणवत्ता या उच्च कीमत** से जोड़ते हैं। इसलिए, कई कंपनियाँ अपने **उत्पादों के पर्यावरणीय लाभों** को बढ़ावा देने में अनिच्छुक रहती हैं।
- ☑ **भविष्योन्मुखी प्रतिबद्धताओं से बचना:** जो कंपनियाँ अपने स्थायित्व प्रयासों के बारे में **मुखर** होती हैं, उनसे **उच्च मानकों** की अपेक्षा की जाती है। चुप रहकर, कंपनियाँ भविष्य की **प्रतिबद्धताओं** की अपेक्षाओं से बच सकती हैं।
- ☑ **ग्राहकों की असुविधा से बचना:** कई व्यवसाय अपने ग्राहकों को असुविधा से बचाने के लिए अपने **पर्यावरणीय प्रयासों को गुप्त रखना** पसंद करते हैं, खासकर जब लोग छुट्टियों पर होते हैं।
- ☑ **ग्रीनवाशिंग के आरोप:** ग्रीनवाशिंग के **सार्वजनिक आरोप** किसी फर्म की छवि को नुकसान पहुँचा सकते हैं। आलोचना के नकारात्मक प्रभावों से बचने के लिए, ये **फर्म बाहरी दर्शकों से अपनी उपलब्धियों** को गुप्त रखना पसंद करती हैं।
- ☑ **उपभोक्ताओं की मांग में कमी:** कई उपभोक्ता **कार्बन तटस्थता** के बारे में अनभिज्ञ हैं या खरीदारी का निर्णय लेते समय शायद ही कभी कार्बन तटस्थ उत्पादों के बारे में पूछते हैं। ग्राहकों की मांग के बिना, कंपनियाँ अपनी **कार्बन तटस्थता के विज्ञापन पर धन खर्च** करने में अनिच्छुक रहती हैं।

कंपनियाँ कार्बन न्यूट्रल प्रमाणित क्यों होती हैं?

- ✓ **प्रतिस्पर्द्धात्मक लाभ:** कार्बन तटस्थता प्रतिस्पर्द्धियों से खुद को अलग करने में मदद करती है और **बेहतर शर्तों पर वित्त** तक पहुँच बनाती है।
- ✓ **सामाजिक प्रमुखता बनाए रखना:** कंपनियाँ अपनी **सामाजिक प्रमुखता** बनाए रखने के लिए कार्बन तटस्थता की मांग करती हैं, जिससे हितधारकों के विश्वास में सुधार होता है।
- ✓ **नैतिक प्रतिबद्धता:** नैतिक रूप से प्रेरित कंपनियाँ **कार्बन तटस्थता** का प्रयास करती हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि ऐसा करना सही है।

ग्रीनहशिंग से संबंधित चिंताएँ:

- **बढ़ती वैश्विक प्रवृत्ति:** जलवायु परामर्श फर्म साउथ पोल की एक रिपोर्ट में पाया गया कि **58% कंपनियाँ** बढ़ती हुई विनियमन और जांच के कारण अपने जलवायु संबंधी संचार को कम कर रही हैं।
- **पारदर्शिता में कमी:** जब कंपनियाँ अपने स्थिरता प्रयासों के बारे में खुलकर जानकारी नहीं देती हैं, तो उनकी प्रगति का आकलन करना कठिन हो जाता है।
- **वैश्विक स्थिरता परिवर्तन में धीमापन:** यदि व्यवसाय अपने पर्यावरणीय प्रयासों के बारे में जानकारी रोकते हैं, तो इससे धारणीय प्रथाओं को अपनाने में देरी हो सकती है।
- **उपभोक्ताओं पर प्रभाव:** जब कंपनियाँ अपनी स्थिरता संबंधी उपलब्धियों के बारे में चुप रहती हैं, तो इससे उपभोक्ता कम टिकाऊ उत्पाद खरीदना जारी रख सकते हैं।

ग्रीनहशिंग के समाधान:

- ☑ **सततता पर प्रकाश डालना:** कंपनियों को यह समझाना चाहिए कि पर्यावरणीय स्थिरता एक यात्रा है न कि एक लक्ष्य।
- ☑ **बेहतर विनियमन और दिशा-निर्देश:** बेहतर विनियमन स्पष्टता ला सकते हैं, विश्वास का निर्माण कर सकते हैं।
- ☑ **सततता पर उपभोक्ता शिक्षा:** उपभोक्ताओं की जागरूकता बढ़ाने से हरित उत्पादों के प्रति नकारात्मक धारणा को परिवर्तित किया जा सकता है।

रेटिना में दवा डालने का सटीक तरीका / Accurate way to put medicine into the retina

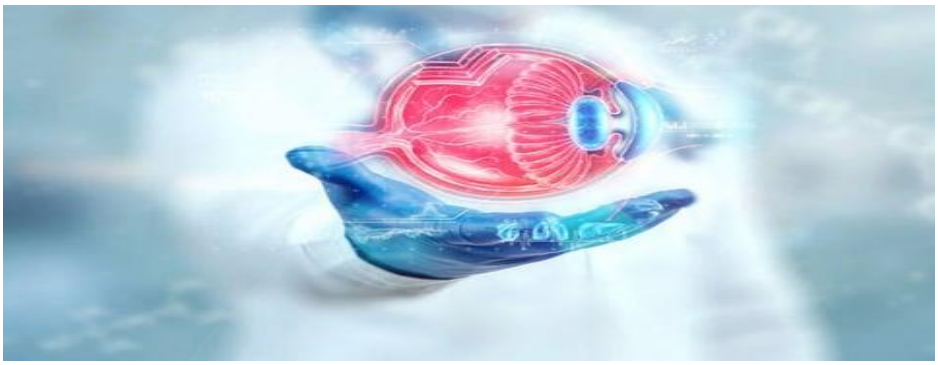

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास (IIT मद्रास) के शोधकर्ताओं ने एक नई तकनीक विकसित की है जो हल्के लेजर की मदद से **आंख की रेटिना** में दवा डालने की प्रक्रिया को सटीक और तेजी से करने में सक्षम है। यह विधि रेटिना संबंधी बीमारियों जैसे कि **रेटिना के फटने और डायबिटिक रेटिनोपैथी** के उपचार में उपयोगी साबित हो सकती है।

शोध के मुख्य बिंदु:

- ☑ **हल्का लेजर हीटिंग:** शोधकर्ताओं ने दिखाया है कि हल्के लेजर द्वारा उत्पन्न **गर्मी से दवा** को रेटिना के तय हिस्सों में बेहतर तरीके से पहुंचाया जा सकता है। यह प्रक्रिया दवा के प्रभावी स्तर को तेजी से प्राप्त करने में मदद करती है।
- ☑ **सिमुलेशन और मॉडलिंग:** टीम ने ताप और भार पर विभिन्न प्रकार के उपचारों के प्रभावों का विश्लेषण करने के लिए **सिमुलेशन और मॉडलिंग** अध्ययन का उपयोग किया।
- ☑ **भारत में रेटिना संबंधी समस्याएँ:** देश में लगभग **1.1 करोड़ लोग रेटिना** संबंधी समस्याओं से जूझ रहे हैं, जिससे इस तरह के **लेजर-आधारित उपचार** की आवश्यकता और बढ़ गई है।
- ☑ **ग्लास आई प्रयोग:** शोधकर्ताओं ने एक **ग्लास आई मिमिक** का उपयोग कर यह प्रदर्शित किया कि **हीट-इंडूस्ट कन्वेक्शन दवा** को रेटिना के सही हिस्सों तक पहुंचाने में लगने वाले समय को कम कर सकता है।
- ☑ **उपचार की गति:** प्राकृतिक तरीके से दवा के प्रभावी मात्रा को रेटिना में पहुंचाने में **12 घंटे लगते** हैं, जबकि गर्मी का उपयोग करने पर यह समय **केवल 12 मिनट** में घट जाता है।
- ☑ **उत्कृष्टता और सुरक्षा:** शोध में यह भी दर्शाया गया है कि गर्मी से **आंख के ऊतकों** को कोई नुकसान नहीं होता है, जिससे यह उपचार सुरक्षित है।
- ☑ **सम्मेलन में प्रस्तुति:** इस शोध को **जर्मनी** में आयोजित **अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ICCHM 2023** में भी प्रस्तुत किया गया है, जो इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति का संकेत है।

प्रोफेसर अरुण नरसिम्हन और उनके सहयोगी श्रीनिवास विबुथे ने इस तकनीक का विकास किया है, जो रेटिना संबंधी रोगों के उपचार में एक नया दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह शोध चिकित्सा क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम है और रेटिना के रोगियों के लिए नई संभावनाएँ खोलेगा।

रेटिना (Retina) क्या है?

रेटिना आंख के पीछे की पतली परत होती है, जो प्रकाश को ग्रहण करती है और उसे विद्युत संकेतों में परिवर्तित करती है। ये संकेत बाद में मस्तिष्क में दृष्टि के अनुभव के लिए भेजे जाते हैं। रेटिना का मुख्य कार्य दृश्य जानकारी को संसाधित करना और उसे मस्तिष्क तक पहुँचाना है।

रेटिना के प्रमुख भाग:

- ✓ **फोटोरिसेप्टर कोशिकाएँ:** रेटिना में दो प्रमुख प्रकार की फोटोरिसेप्टर कोशिकाएँ होती हैं: **rods (रोड्स) और cones (कोन्स)।**
  - **रोड्स:** ये कम **रोशनी में देखने** में मदद करती हैं और रात के समय देखने के लिए महत्वपूर्ण होती हैं।
  - **कोन्स:** ये **रंगों को देखने** में सहायक होती हैं और दिन के समय में बेहतर दृष्टि प्रदान करती हैं।
- ✓ **पिगमेंट एपिथेलियम:** यह रेटिना की बाहरी परत है, जो **फोटोरिसेप्टर कोशिकाओं** के लिए पोषण प्रदान करती है और उन्हें पुनर्नवीनीकरण में मदद करती है।
- ✓ **स्नायु फाइबर:** रेटिना में मौजूद **फोटोरिसेप्टर कोशिकाओं** से विद्युत संकेतों को मस्तिष्क तक पहुँचाने का कार्य **स्नायु फाइबर** करते हैं। ये संकेत फिर मस्तिष्क द्वारा दृश्य अनुभव में परिवर्तित होते हैं।

रेटिना की भूमिका:

- **दृश्य संवेदन:** रेटिना प्रकाश को ग्रहण करता है और उसे **विद्युत संकेतों** में परिवर्तित करता है।
- **दृश्य स्पष्टता:** यह सुनिश्चित करता है कि हम स्पष्ट रूप से देख सकें, चाहे प्रकाश की मात्रा कितनी भी हो।
- **रंग पहचान:** रेटिना रंगों को पहचानने में मदद करता है, जिससे हम वस्तुओं को उनके रंग के अनुसार पहचान सकते हैं।

भारतीय खाद्य निगम ने अपने डिपो में आधुनिक वीडियो निगरानी प्रणाली की शुरुआत की

भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) ने खाद्यान्न प्रबंधन में सुधार और निगरानी की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए अपने डिपो में आधुनिक **आईपी-आधारित सीसीटीवी निगरानी प्रणाली** स्थापित करने की पहल की है।

यह कदम मंत्रालय की 100 दिन की उपलब्धियों के तहत उठाया गया है, जिसमें **एफसीआई के 561 डिपो में लगभग 23,750 कैमरे** लगाए जाएंगे। इस नई प्रणाली से निगरानी में सुधार होगा और बेहतर तस्वीरों के साथ दूर से निगरानी की क्षमता में वृद्धि होगी।

मुख्य विशेषताएँ:

- ☑ **आधुनिक आईपी-आधारित सीसीटीवी प्रणाली:** पहले इस्तेमाल की जा रही **एनालॉग प्रणाली** को बदलकर **आईपी-आधारित सीसीटीवी प्रणाली लागू** की जा रही है, जिससे उच्च गुणवत्ता वाली तस्वीरें और बेहतर निगरानी सुविधाएँ मिलेंगी।
- ☑ **प्रूफ ऑफ कॉन्सेप्ट (पीओसी):** श्यामनगर में आयोजित पीओसी के सफल परिणामों के बाद इस **नई प्रणाली का कार्यान्वयन** किया जा रहा है।
- ☑ **सीसीटीवी कवरेज:** वर्तमान में **516 एफसीआई डिपो सीसीटीवी निगरानी** में हैं, जिनका लाइव वेब फीड **"अपना डिपो देखें"** टैब के माध्यम से एफसीआई की वेबसाइट पर उपलब्ध है।
- ☑ **नए फीचर्स:** **कैमरा टेम्परिंग, मोशन डिटेक्शन, और ऑनबोर्ड एनालिटिक्स** जैसी उन्नत सुविधाओं के साथ यह नई प्रणाली डिपो की सुरक्षा को बढ़ाएगी।
- ☑ **केंद्रीकृत कमांड कंट्रोल सेंटर (सीसीसी):** एफसीआई मुख्यालय में एक **केंद्रीकृत कमांड कंट्रोल सेंटर और नेटवर्क ऑपरेटिंग सेंटर** की स्थापना की जाएगी, जो पूरे सिस्टम की निगरानी करेगा।
- ☑ **पर्यावरण और आर्द्रता सेंसर:** भविष्य में प्रणाली की कार्यक्षमता को और बेहतर बनाने के लिए इन सेंसरों का परीक्षण किया जाएगा, जो पर्यावरण की स्थितियों की निगरानी करेंगे।

यह पहल एफसीआई की खाद्यान्न सुरक्षा और सार्वजनिक वितरण प्रणाली में **निगरानी और प्रबंधन** में **सुधार की दिशा** में एक महत्त्वपूर्ण कदम है, जिससे भंडारण की गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सकेगी और सरकारी योजनाओं के तहत वितरण प्रणाली को सुदृढ़ बनाया जा सकेगा।

एकीकृत रक्षा स्टाफ (IDS) मुख्यालय Integrated Defence Staff (IDS) Headquarters

एकीकृत रक्षा स्टाफ (IDS) मुख्यालय ने **01 अक्टूबर, 2024** को अपने **24वें स्थापना दिवस** का उत्सव मनाया, जिसमें शहीद नायकों की याद में राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित की गई।

एकीकृत रक्षा स्टाफ (IDS) मुख्यालय:

01 अक्टूबर, 2001 को स्थापित IDS मुख्यालय का उद्देश्य **तीनों सेवाओं के बीच एकीकरण और संयुक्तता** को बढ़ावा देना है, ताकि भारत की रक्षा क्षमताओं को सशक्त बनाया जा सके। इसका आदर्श वाक्य **"संयुक्तता के माध्यम से विजय"** है, जो इसे सेनाओं के समन्वय में अग्रणी बनाता है।

IDS की भूमिका:

IDS मुख्यालय तीनों सेनाओं के बल संरचनाओं, आधुनिकीकरण और उपकरणों के विकास में समन्वय और नीतिगत इनपुट प्रदान करता है। इसके अंतर्गत:

- **रक्षा खुफिया जानकारी को मजबूत करना,**
- **सैन्य कूटनीति को बढ़ावा देना,**
- **संयुक्त सिद्धांत तैयार करना,**
- **मानवीय सहायता और आपदा राहत संचालन योजनाओं का विकास करना** प्रमुख भूमिका निभाई जाती है।

मुख्य उपलब्धियाँ:

- ✓ **संयुक्त सिद्धांत और संयुक्त संचार प्रणाली** का विकास।
- ✓ **पांच संयुक्त सेवा प्रशिक्षण संस्थानों** की स्थापना।
- ✓ **स्वदेशीकरण के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता** के लिए विशेष प्रयास।
- ✓ **द्विपक्षीय और बहुपक्षीय रक्षा संबंधों** को मजबूत करने हेतु **18 नए रक्षा विंग** की स्थापना।

स्वदेशीकरण और आत्मनिर्भरता:

IDS ने **संयुक्त सेवा स्वदेशीकरण केंद्र** के तहत आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए स्वदेशीकरण रोडमैप तैयार किया है। साथ ही, **उच्च स्तरीय रक्षा स्वदेशीकरण समिति** का गठन किया गया है, जो स्वदेशी रक्षा उपकरणों के विकास और नवाचार को बढ़ावा देने में सहायक है।

संयुक्त अभ्यास और कूटनीतिक संबंध:

IDS ने भारत और मित्र देशों के बीच **संयुक्त अभ्यास** जैसे एक्स इंद्रा, एक्स टाइगर ट्रायम्फ और एक्स ब्राइट स्टार के माध्यम से सैन्य सहयोग को बढ़ाया है, जो अंतर-संचालन की दिशा में महत्वपूर्ण हैं।

वाइस एडमिरल आरती सरीन
Vice Admiral Aarti Sareen

वाइस एडमिरल आरती सरीन ने **01 अक्टूबर, 2024** को **सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा (डीजीएएफएमएस) की महानिदेशक** के रूप में पदभार ग्रहण किया। वह इस पद पर नियुक्त होने वाली **पहली महिला अधिकारी** हैं।

प्रमुख योगदान और उपलब्धियाँ:

- ✓ **चिकित्सा सेवाओं में लंबा अनुभव:** वाइस एडमिरल आरती सरीन ने अपने **38 वर्षों के करियर में सेना, नौसेना, और वायु सेना तीनों** में सेवा की है, जो एक दुर्लभ सम्मान है। उन्होंने कई प्रमुख पदों **जैसे डीजी मेडिकल सर्विसेज (नौसेना), डीजी मेडिकल सर्विसेज (वायु), और सशस्त्र बल चिकित्सा महाविद्यालय (एएफएमसी)** के निदेशक और कमांडेंट के रूप में काम किया है।
- ✓ **शैक्षणिक योग्यता:** वाइस एडमिरल सरीन एएफएमसी, पुणे की पूर्व छात्रा हैं। उन्होंने रेडियोडायग्नोसिस में एमडी किया है और मुंबई के **टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल** से **रेडिएशन ऑन्कोलॉजी में डिप्लोमेट** नेशनल बोर्ड की डिग्री प्राप्त की है। इसके साथ ही उन्होंने **पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय** से **गामा नाइफ सर्जरी** का प्रशिक्षण भी लिया है।

प्रमुख पद और जिम्मेदारियाँ:

- **प्रोफेसर और प्रमुख, रेडिएशन ऑन्कोलॉजी, आर्मी हॉस्पिटल (आर एंड आर)।**
- **कमांडिंग ऑफिसर, आईएनएचएस अश्विनी।**
- **कमांड मेडिकल ऑफिसर, दक्षिणी और पश्चिमी नौसेना कमान।**

सम्मान और पुरस्कार: वाइस एडमिरल सरीन को उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए कई सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें शामिल हैं:

- **अति विशिष्ट सेवा पदक (2024)।**
- **विशिष्ट सेवा पदक (2021)।**
- **चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ प्रशस्ति (2017), चीफ ऑफ नेवल स्टाफ प्रशस्ति (2001), और जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ प्रशस्ति (2013)।**

राष्ट्रीय टास्क फोर्स और नारी शक्ति पहल:

हाल ही में **सुप्रीम कोर्ट** द्वारा चिकित्सा पेशेवरों के लिए सुरक्षित कार्य स्थितियों और प्रोटोकॉल तैयार करने हेतु उन्हें **राष्ट्रीय टास्क फोर्स** का सदस्य नियुक्त किया गया है। वह **नारी शक्ति पहल** की एक प्रेरणादायक आइकन हैं, जो **युवा महिलाओं को सशस्त्र बलों में शामिल होने के लिए प्रेरित** करती हैं।

उनकी भूमिका और उपलब्धियाँ सशस्त्र बलों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और नेतृत्व की मिसाल हैं।

राज्य आपदा प्रतिक्रिया निधि (SDRF)
State Disaster Response Fund (SDRF)

हाल ही में **गृह मंत्रालय (MHA) ने राज्य आपदा मोचन निधि (SDRF)** से केंद्रीय हिस्से के रूप में और **राष्ट्रीय आपदा मोचन निधि (NDRF)** से अग्रिम राशि के रूप में 14 बाढ़ प्रभावित राज्यों को **₹5,858.60 करोड़** जारी किए हैं। यह राशि उन राज्यों को दी गई है जो इस वर्ष **दक्षिण-पश्चिम मानसून** के दौरान अत्यधिक भारी वर्षा, बाढ़ और भूस्खलन से प्रभावित हुए हैं।

राज्य आपदा प्रतिक्रिया निधि (SDRF) के बारे में:

राज्य आपदा प्रतिक्रिया निधि (SDRF) का गठन **आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005** की **धारा 48 (1) (ए)** के तहत किया गया है। इसका उद्देश्य आपदाओं से निपटने के लिए राज्य सरकारों को सहायता प्रदान करना है। यह आपदा के बाद तत्काल राहत कार्यों के लिए राज्य सरकारों के पास उपलब्ध प्राथमिक निधि है। इसका गठन **13वें वित्त आयोग** की सिफारिशों के आधार पर किया गया था।

प्रमुख बिंदु:

- ✓ **उद्देश्य**: SDRF का मुख्य उद्देश्य राज्य सरकारों को अधिसूचित आपदाओं के जवाब में तत्काल राहत प्रदान करने के लिए वित्तीय सहायता देना है।
- ✓ **लेखा-परीक्षण:** SDRF का लेखा-परीक्षण प्रतिवर्ष **भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG)** द्वारा किया जाता है, ताकि निधि के सही उपयोग की जांच की जा सके।
- ✓ **योगदान का वितरण:**
  - **सामान्य श्रेणी** के राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए केंद्र सरकार SDRF आवंटन का **75%** योगदान करती है।
  - **विशेष श्रेणी** के राज्यों **(जैसे पूर्वोत्तर राज्य, सिक्किम, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर)** के लिए केंद्र सरकार का योगदान **90%** होता है।
  - **केंद्रीय अंशदान वित्त आयोग की सिफारिश** के अनुसार साल में दो बराबर किस्तों में जारी किया जाता है।
- ✓ **SDRF के अंतर्गत आपदाएं:** SDRF के अंतर्गत आने वाली अधिसूचित आपदाओं में शामिल हैं:
  - **चक्रवात, सूखा, भूकंप, आग, बाढ़, सुनामी, ओलावृष्टि, भूस्खलन, हिमस्खलन, बादल फटना, कीट हमला, पाला और शीत लहरें।**
- ✓ **स्थानीय आपदाएँ:** राज्य सरकारें SDRF की निधि का **10%** तक उन स्थानीय प्राकृतिक आपदाओं के पीड़ितों को तत्काल राहत प्रदान करने के लिए उपयोग कर सकती हैं, जो अधिसूचित सूची में नहीं आती हैं, लेकिन स्थानीय रूप से **'आपदा'** मानी जाती हैं।

भारत के प्रवासी नागरिक (OCI)
Overseas Citizen of India (OCI)

हाल ही में, न्यूयॉर्क स्थित **भारत के महावाणिज्य दूतावास** ने सोशल मीडिया पर फैली अफवाहों को खारिज किया है, जिसमें कहा गया था कि भारत के प्रवासी नागरिक (OCI) को **"विदेशी"** के रूप में पुनर्वर्गीकृत किया जा रहा है।

OCI योजना का परिचय:

- **शुरुआत:** OCI (**विदेशी भारतीय नागरिक) योजना अगस्त 2005** में शुरू की गई थी।
- **लाभार्थी:** यह योजना भारतीय मूल के सभी **व्यक्तियों (पीआईओ)** के पंजीकरण की सुविधा देती है, जो **26 जनवरी, 1950** को या उसके बाद भारत के नागरिक थे, या उक्त तिथि पर भारत के नागरिक बनने के पात्र थे।

OCI कौन नहीं बन सकता?

- **पाकिस्तान या बांग्लादेश के नागरिक:** यदि किसी आवेदक के **माता-पिता या दादा-दादी** कभी **पाकिस्तान या बांग्लादेश** के नागरिक रहे हों, तो वह OCI कार्ड प्राप्त करने के लिए पात्र नहीं है।
- **सेवा में या सेवानिवृत्त विदेशी सैन्यकर्मी:** ऐसे व्यक्तियों को **भी OCI अनुदान** के लिए पात्र नहीं माना जाता है।
- **विदेशी मूल के जीवनसाथी:** हालांकि, भारत के नागरिक का विदेशी मूल का जीवनसाथी या किसी OCI का विदेशी मूल का **जीवनसाथी, जिसका विवाह पंजीकृत** हो और कम से कम दो वर्ष तक जीवित रहा हो, OCI कार्ड के लिए आवेदन कर सकता है।

OCI कार्ड धारकों के लाभ:

- **वीज़ा सुविधाएँ:** OCI कार्ड धारक को भारत आने के लिए **बहु-प्रवेश, बहु-उद्देश्यीय आजीवन वीजा** मिलता है।
- **पंजीकरण से छूट:** भारत में किसी भी अवधि के लिए रहने पर, उसे **स्थानीय पुलिस प्राधिकरण के पास पंजीकरण** से छूट प्राप्त होती है।

OCI कार्ड धारक के अधिकार:

- **वोटिंग का अधिकार नहीं:** OCI कार्ड धारक को भारत में **वोट देने का अधिकार नहीं है।**
- **संविधानिक पदों के लिए अयोग्यता:** वह भारतीय संसद, विधान सभा या विधान परिषद के सदस्य बनने के लिए पात्र नहीं है। इसके अलावा, वह **राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, सर्वोच्च न्यायालय या उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जैसे संवैधानिक पदों को धारण करने का हकदार नहीं** है।
- **सरकारी नौकरी:** OCI धारक सामान्यत: **सरकारी नौकरी नहीं** कर सकता।

भारत में सांप के काटने से सबसे अधिक मौतें!
India has the highest number of deaths due to snake bites!

भारत में **सर्पदंश** एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या है, जो प्रतिवर्ष **लगभग 58,000 लोगों की मौत** का कारण बनती है। यह आंकड़ा दुनिया में सबसे अधिक है। इसके बावजूद, सांप के काटने की घटनाओं की रिपोर्टिंग बेहद कम होती है, जिससे इलाज में कठिनाई आती है और **आंकड़ों का सही मूल्यांकन नहीं** हो पाता। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर इन मामलों की विस्तृत जांच की जाए, तो सर्पदंश से होने वाली मृत्यु दर और विकलांगता को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

WHO की रणनीति और भारत का लक्ष्य:

- **विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)** की रणनीति के अनुसार, भारत ने **2030** तक सर्पदंश से होने वाली **मृत्यु और विकलांगता** को आधा करने का लक्ष्य रखा है।
- **भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (ICMR)** इस दिशा में **अस्पताल और समुदाय-आधारित सर्पदंश** के आंकड़े एकत्र कर रहा है।

आंकड़ों की कमी और अध्ययन:

- **2013** में सर्पदंश को **WHO** की **उपेक्षित बीमारियों** की सूची से हटा दिया गया था, लेकिन **2017 में इसे फिर से शामिल** किया गया।
- इसका मुख्य कारण भारत में सर्पदंश से **संबंधित डेटा की कमी** है।
- ICMR द्वारा एक सर्वेक्षण किया जा रहा हैं, जो **14 राज्यों में 84 मिलियन लोगों** को कवर कर रहा है।

रिपोर्टिंग में कमी के कारण: सांप काटने की घटनाएं कम रिपोर्ट होने का एक बड़ा कारण यह है कि कई लोग अस्पतालों में जाने के बजाय धार्मिक या पारंपरिक उपचार का सहारा लेते हैं।

मुआवजा और राज्य सरकार की भूमिका:

- **मध्य प्रदेश** में **2020 से 2022** के बीच सर्पदंश से हुई मौतों के विश्लेषण से पता चला कि राज्य सरकार ने मुआवजे के रूप में **28 मिलियन अमेरिकी डॉलर** का भुगतान किया, जो रिपोर्ट की गई **330 मौतों** से अधिक है, लेकिन अनुमानित **5,200 मौतों** से कम है।

विष के प्रभाव और एंटीवेनम:

- बेंगलुरु में **भारतीय विज्ञान संस्थान** के शोध से यह भी पता चला है कि **रसेल वाइपर** और **चश्माधारी कोबरा (नाग)** का जहर उनके जीवनकाल में नाटकीय रूप से भिन्न होता है।
- शोधकर्ताओं ने नए **एंटीवेनम समाधानों** की खोज में काम करना शुरू किया है, जिसमें पुन: **संयोजक एंटीबॉडी और पेप्टाइड-आधारित उपचार** शामिल हैं।

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,

Stenographer (Grades C & D)

Only at

99/-Year

Enroll Now !

APNI PATHSHALA

UPPSC,RO/ARO,BPSC,UP TEST SERIES

UPPSC
(TEST SERIES)
- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

299/- YEAR

RO/ARO
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

BPSC
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299 YEAR

SSC (TEST SERIES)
- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

RPF (TEST SERIES)
- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

2024

GA FOUNDATION

RECORDED BATCH

Subject

- HISTORY ,POLITY
- GEOGRAPHY
- ECONOMICS

Price

1499/-

Validity
1 Year

By Ankit Avasthi Sir

GA FOUNDATION

Hand Written Notes

Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Ankit Inspires India

₹ Only 1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

7878158882

RRB NTPC

TEST SERIES

- 100+ Mock Test
- 78 Sectional Test
- 40+ years PYPs
- 60+ Current affairs

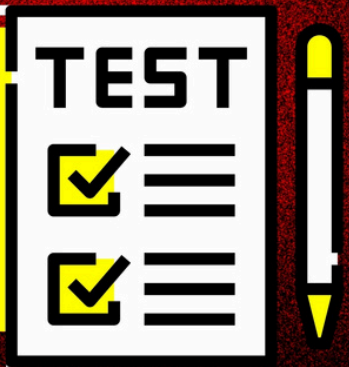

Only 99 Per Year

Buy Now